कक्षा 9

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य

एवं समाज सेवा

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाज सेवा

कक्षा 9

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाज सेवा

(S.U.P.W. & C.S.)

कक्षा – 9

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति

पुस्तक : समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाज सेवा
कक्षा – 9

संयोजक :– डॉ. आर.के. मोटवानी, सह आचार्य प्रबंध अध्ययन विभाग
राजकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, अजमेर

लेखकगण :–

1. गोविन्द नारायण पारीक, वरिष्ठ प्रवक्ता, यांत्रिकी
   राजकीय पॉलिटेक्निक महाविद्यालय, अजमेर
2. एच.आर. चौधरी, सहायक आचार्य
   कम्प्यूटर विज्ञान अभियांत्रिकी एवं आई.टी. विभाग,
   राजकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, अजमेर
3. नरेन्द्र सिंह रावत, अनुदेशक
   राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान,, अजमेर
4. सुनील कटियार, अनुदेशक
   राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, अजमेर
5. डॉ. सुरेन्द्र पाल सिंह, व्याख्याता
   रा.उ.मा.वि., बीजवाड़ चौहान, मुन्डावर (अलवर)
6. लीलामणि गुप्ता, प्रधानाचार्य
   राजकीय सावित्री उच्च माध्यमिक विद्यालय, अजमेर

प्रस्तावना

शिक्षा हर स्तर पर एक प्रक्रिया है जो विद्यार्थी को सभी बन्धनों से मुक्त करती है। चाहे वह बन्धन अज्ञानता का हो, कुरीति का अथवा अर्थ का। हमारे राष्ट्र की संस्कृति में तभी तो 'सा विद्या या विमुक्तये' कहा गया है। हमारी शिक्षा इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रयासरत रहे, इसी से विद्यार्थी सही अर्थों में शिक्षित कहलायेगा। केवल पुस्तकें पढ़नें, पाठ याद करने अथवा कुछ विषयों की जानकारी पा लेना ही शिक्षा का लक्ष्य कदापि नहीं है। शिक्षा मूलतः आत्मसात करने का नाम है। आदर्श विद्यार्थी वह है जिसकी शिक्षा उसके व्यवहार एवं चरित्र में परिलक्षित होती है।

शिक्षा का जन्म एवं विकास दोनों अनुभूति से ही होते हैं। अतः अनुभव आधारित शिक्षा ही शिक्षा के मूल उद्देश्य की पूर्ति करने में सक्षम है। ऐसी शिक्षा कर्तव्यबोध के साथ विद्यार्थी में आत्म गौरव तथा मौलिक जीवन मूल्यों को विकसित करती है। इस प्रकार यह सामाजिक एवं राष्ट्रीय जागरण में भी अपनी भूमिका निभाती है।

विद्यार्थियों को अनुभव आधारित शिक्षा देने तथा उनको अपने कर्तव्य का बोध करवाने के उद्देश्य से ही विभिन्न स्तरों पर नवीन प्रयोग किये जाते रहे हैं। इसी क्रम में 'समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाज सेवा' विषय अनिवार्य विषय के रूप में पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास को केन्द्र में रखते हुये कुछ अनिवार्य प्रवृत्तियाँ रखी गई हैं, जिसमें दैनिक उपयोग में आने वाले ईंधन के अनुकूलतम उपयोग, उसकी जानकारी, इससे सम्बन्धित उपकरणों का उपयोग, रखरखाव व साधारण मरम्मत तथा ईंधन के प्रयोग से होने वाले प्रदूषण को कम करने के उपाय बताये गये हैं। इसके अतिरिक्त डाकघर जिसे संचार माध्यम की रीढ़ कहा जाता है तथा जो छोटी–छोटी बचतों को एकत्र कर राष्ट्र के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, पर भी पर्याप्त जानकारी को शामिल किया गया है।

विद्यार्थी द्वारा अपने विद्यालय का प्रबन्धन किस प्रकार किया जा सकता है, यह भी इसकी विषय वस्तु का भाग है जिसमें वृक्षारोपण, स्वच्छता, वाटिका/उद्यान विकसित करना व उनका संरक्षण, कचरे का प्रबन्धन अर्थात् उसका सही निस्तारण, खेल के मैदान तथा रास्तों का रखरखाव व संरक्षण सम्मिलित किया गया है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि यह सभी कार्य केवल सैद्धान्तिक न होकर प्रायोगिक होंगे तभी इस विषय के अनुकूल परिणाम सामने आयेंगे।

परिवहन के सार्वजनिक साधन उनका उपयोग, उनसे सम्बन्धित सारणियों को पढ़ना तथा विद्युत मीटर पढ़ना एवं उससे व्यय का अनुमान लगाना इत्यादि भी विद्यार्थी को कर्तव्यबोध करवायेगा।

अनिवार्य प्रवृत्ति समूह के अतिरिक्त चार वैकल्पिक प्रवृत्ति समूहों की भी रचना की गई है। इन प्रवृत्ति समूहों में बालक व बालिकाओं दोनों के लिये बराबर ही महत्त्वपूर्ण एवं जानने योग्य विषय वस्तु सम्मिलित की गई है। दैनिक जीवन में दैनन्दिनी लेखन, दैनिक आय–व्यय लेखन, खाद्य सामग्री के संरक्षण, फलों व सब्जियों के रख रखाव, कुछ उपयोगी खाद्य सामग्री तैयार करना, विभिन्न प्रकार के टाँके लगाने, कपड़ो की मरम्मत करने, पेंटिंग आदि को सम्मिलित किया गया है।

इसके अतिरिक्त मोम, प्लास्टर ऑफ पेरिस, मिट्टी कुट्टी से एवं अनुपयोगी वस्तुओं से उपयोगी सामग्री बनाना तथा वेसलीन, अमृतधारा, दन्तमंजन आदि की निर्माण विधि को भी सम्मिलित कर विद्यार्थियों को इन वस्तुओं की न केवल प्रायोगिक जानकारी उपलब्ध करवाने का प्रयास किया गया है अपितु इन सामग्रियों के निर्माण के अनुभव से विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में पहला कदम उठाने का प्रयास किया गया है।

विद्यार्थियों में भावनात्मक एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव एवं परस्पर सहयोग की भावना का विकास सुनिश्चित करने के लिये एक पाँच दिवसीय शिविर का भी प्रावधान किया गया है, जिसमें विद्यार्थी शिविर स्थल पर एक साथ रहकर तथा मिलजुल कर कार्य करने का अधिकाधिक अवसर मिलेगा।

इस शिविर में विद्यार्थी सामूहिक रूप से सामुदायिक सेवा कार्य, जैसे कि वृक्षारोपण, साक्षरता का प्रसार, सहकारिता तथा सार्वजनिक स्थानों की सफाई, त्यौहार, मेले व सम्मेलनों की व्यवस्था करेंगे। इनके अतिरिक्त स्थानीय उद्योगों, व्यवसाय, लोकगीत, मुहावरों आदि का सर्वेक्षण एवं संकलन कार्य कर इन पर आलेख तैयार करेंगे। इससे उनमें शोध की प्रवृत्ति का उद्भव होगा।

विद्यार्थी को राष्ट्रहित में तैयार करने के उद्देश्य से इस पाँच दिवसीय शिविर में विद्यार्थियों से राष्ट्रीय भावनात्मक एकता प्रयोजना कार्य करवाये जाने प्रस्तावित हैं जिससे उन्हें देश के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों, राज्यों, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों तथा महापुरूषों के जीवन से अवगत करवाया जा कर उन्हें आत्मसात् करने के विभिन्न प्रायोगिक प्रयास किया जाना भी सम्मिलित किया गया है। योगाभ्यास को भी शिविर की गतिविधियों में शामिल करते हुये इसके सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी भी उपलब्ध करवाई गई है। शिविर में सांस्कृतिक एवं मनोरंजनात्मक कार्यों के द्वारा शिविरार्थियों को अपने सांस्कृतिक मूल्यों का आभास करवाया जाना भी सुनिश्चित हो जिससे इन सांस्कृतिक एवं मनोरंजनात्मक कार्यक्रमों द्वारा समाज–सुधार एवं राष्ट्रीय चेतना जागृत की जा सके।

ऐसा विश्वास है कि इस पाठ्यक्रम के पूर्ण अनुपालन से विद्यार्थियों को बन्धनमुक्त जीवन का महत्त्व पता चल सकेगा जिससे वे भी शिक्षा के मूल उद्देश्य को प्राप्त करने को प्रयासरत होंगे तथा एक सक्षम व्यक्तित्व के साथ सक्षम राष्ट्र के निर्माण में अपनी भावी महत्ती भूमिका निभा पाऐंगे।

लेखकगणों द्वारा यह पूर्ण ध्यान रखा गया हैं कि यह पुस्तक निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति में सफल रहे। शिक्षकगणों, अभिभावकों, विद्यार्थियों तथा समाज के प्रबुद्धजनों से अनुरोध हैं कि पुस्तक को उत्कृष्ट बनाने की दिशा में अपने बहुमूल्य सुझाव प्रेषित कर अनुग्रहित करें।

–संयोजक